अध्याय - ६

उपसंहार

==========

अध्याय : 6

उपसंहार

==========

आज व्यक्ति उसी साहित्य में रूचि रखता है जो जीवन के समकालीन हो। आपका साहित्य इस कसोटी पर खरा उतरता है। इसलिए मैंने आपके नाट्यसाहित्य का, सामाजिक यथार्थता मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन के लिए विषय चुनकर यह लघु–शोध–प्रबंध प्रस्तुत किया है।

आपका साहित्य समाज से जुडा हुआ है। इसमें आपने उच्चवर्ग की मनमानी, निम्न की दुर्दशा का चित्रण सही ढंग से चित्रित किया है। इसमें आपने मनुष्य में छिपी पाशविकता को उजागर किया। साथ ही साथ आज के वर्तमान राजनीति, बौध्दिक नपुंसकता, विघटित हो रहे जीवनमूल्य आदि पर भी करारा व्यंग्य किया है। आपका साहित्य समाज के लिए पथदर्शक है। अपने साहित्य की प्रत्येक विधा पर आपने व्यक्तित्व की छाप रखी है।

पहले अध्याय में मुद्राराक्षस के जीवन का परिचय देते हुये आपके साहित्य की पहचान करा दी गयी है। सुभाषचंद्र आर्य ही मुद्राराक्षस है। आपकी पढाइ, पत्रकारिता, मजदूर आंदोलन, अनेक नौकरियाँ, संपादन कार्य का परिचय कराया है। आपका जीवन अध्ययनशील रहा है। सामान्य लोगों के प्रति प्रेम, सहानुभूति रही है। इसलिए आपके साहित्य में उन्हीं की समस्याओं का चित्रण किया गया है। आपने नाटक, उपन्यास, साहित्यिक आलोचना, कहानी संग्रह, रेडिओ नाटक, इससे आपकी प्रतिभा का परिचय मिलता है। यहाँ पर आपके नाटके में जो नया रूप आप ले आये उसका दिग्दर्शन कराया है। असंगत नाटक की जो परंपरा आ रही थी उसे आपने आगे बढाया है।

दूसरे अध्याय में असंगत नाटक है क्या? इस बात की चर्चा की है। किन परिस्थितियों में असंगत नाटक सामने आये पाश्चात्य जगत में बैकेट, आयनेस्को, पिंटर, जैने जैसे नाटककार हुए उसका परिचय दिया है। वहाँ की परिस्थितियों में जो नाटककार सामने आये उन कारणों की चर्चा की है। इसके बाद असंगत नाटक और मनोविज्ञान के संबंध की चर्चा की है। इसके असंगत नाटकों की कथा, पात्र, भाषा, रंगमंच, उद्देश्य को लेकर क्या विशेषतायें मिलती है उनका जिक्र किया है। इसके उपरांत हिंदी के असंगत नाटक और नाटककारों का परिचय कराया है जो परंपरा भुवनेश्वर प्रसाद से शुरू होकर अग्रवाल, डॉ.लक्ष्मीकांत वर्मा, डॉ.शम्भूनाथ सिंह, काशीनाथ सिंह, मणि मधुकर, डॉ.सत्यव्रत सिन्हा, लक्ष्मीनारायण लाल, राजकमल चौधरी, ब्रजमोहन शाह, रमेश बक्षी, रामेश्वर प्रेम, सुदर्शन मजीठिया, हमीदुल्ला, तक चली है। जीवन की सारहीनता, ऊब संत्रास, निराशा, असंगति दिखायी है।

तीसरे अध्याय में अध्ययनार्थ चुने तेंदुआ नाटक का परिचय दिया है। प्रारंभ में इसे प्रयोगात्मक नाटक तथा विचारोत्तेजक नाटक बताया है। फिर उसका नयापन, उसकी प्रयोगिकता विशेषकर प्रतीकात्मकता में बतायी है। खुद मुद्राराक्षसजी ने इसे प्रतीकात्मक नाटक मानकर उसकी भूमिका में जो चर्चा की है उसे उध्दृत किया है। यहाँ यथार्थ और प्रतीकात्मकता को अपनाकर नाटक को सामने रखा है। नाटक के पात्र मिसेस मदान, रेनु रॉय, माली भूषणराय के द्वारा नैराश्य, संत्रास, कुंठा, विविशता को प्रस्तुत किया है। इसकी भाषा भी अलग प्रकार की रही है। इन संवादों की विशेषता को बताया है। और अंत में इस प्रतीकों को स्पष्ट करने की कोशिश की है।

चौथे अध्याय में तिलचट्टा नाटक लिखने की प्रेरणा कैसे मिल यह बताया है। तिलचट्टा एक ओर आंतकवादी का प्रतीक है तो दूसरी ओर मनुष्य की यौन भावना का प्रतीक है। देव ओर केशी के प्रसंग इसमें आये है। इसमें डॉक्टर, पिंडारी, काला आदमी, अफसर, दो सिपाही आदि पात्र आते है। पर तिलचट्टा को भी पात्र बताया है। समाज के जिम्मेदार लोग ही कैसे बर्ताव करते है इसे घटनाये बताती है। केशी भी पति के नपुंसक होने से वह डाक्टर से

संबंध रखती है। यहाँ मनुष्य का पशु हो जाना सूचित किया है। मनुष्य पर पाशविक संस्कार अधिक हुये बताये है। उसी तरह धन कमाने के हेतू मनुष्य किसी भी हद तक जाता हुआ दीखाता है। नौकरी से पराधीनता, उसीसे यांत्रिकता, परिणाम, स्वरूप, सुख का अभाव जीवन में आता है। इसको प्रस्तुत करते समय मनोविश्लेषण का तत्व भी उसमें आ गया है। देव आद्यंत संसार में रहकर आत्महत्या कर लेता है। मानव मन के परतों को खोलकर आंतरिक विरोधों संदिग्धियों को प्रस्तुत किया है। तिलचट्टा आतंकवादी का प्रतीक है, जिसे स्पष्ट किया गया है। यह नाटक मानवीय त्रासदी को प्रस्तुत करता है। खुद मुद्राराक्षसजी ने कहा है तिलचट्टा बत्ती जलाते ही गायब होता है। एक तिलचट्टा मरता है तो ग्यारह पैदा हो जाते हैं। यह भ्रष्टाचार, आतंक का प्रतीक है जो समाज के ऱ्हास को व्यक्त करता है।

पाँचवें अध्याय में आलोच्च नाटकों के नाट्यशिल्प की चर्चा की है। इन नाटकों के कथ्य में प्रयोग देखने मिलता है। विशेषकर प्रतीकों का प्रयोग किया गया है। इन नाटकों में वस्तु महत्वपूर्ण नहीं उसके द्वारा व्यंजित बातें महत्व की है। प्रतीक आर्थिक बातों को हमारे सामने रखते हैं। भ्रष्टाचार, मूल्यविघटन, पाशविकता इन प्रतीकों से प्रस्तुत की गयी है। अन्य नाटकों की तरह इसकी सीधी कथावस्तु बतायी नहीं जा सकती। यही बात पात्रों के संबंध में हैं।

इसके संवाद भी भिन्न है। इसकी भाषा, शब्द, वाक्य विन्यास ही अलग है, जिनकी चर्चा की गयी है। इनमें गीत का प्रयोग है, मुद्राराक्षसजी को मंच का अनुभव रहने से मंच के संबंध में भी काफी बातें कहीं है। आप कुशल निर्देशक और अभिनेता भी रह है। ध्वनि योजना का सफल प्रयोग किया है। नाटक में प्रतीकों को योजना तथा इन नाटकों के शीर्षकों की चर्चा की है।

हिंदी नाट्य साहित्य क इतिहास में असंगत नाटक की परंपरा में मुद्राराक्षसजी के नाटकों का अलग स्थान है। यहाँ उनके पशु प्रतीकों का प्रयोग किये गये नाटकों का अध्ययन किया गया है। अपने स्त्री–पुरूष संबंध, नपुंसकता, अधिकारी वर्ग की पाशविकता, विघटित होने

वाले जीवन मूल्यों को प्रस्तुत किया है। इसमें मानव जीवन की अनिवार्यतः अर्थहीनता चित्रित की है। इसमें निश्चित अर्थ बोध नहीं होता, जीवन की सारहीनता, ऊब, संत्रास, निराशा, असंगति दिखायी है।

इसप्रकार इन नाटकों का अध्ययन करने के उपरांत हम यह कह सकते हैं कि असंगत नाटककार मुद्राराक्षसजी ने इन नाटकों में पशु प्रतीकों का प्रयोग किया है। जिसके द्वारा उन्होंने अपने कथ्य को व्यंजित किया है। इन प्रतीकों के कारण ये मुद्राराक्षस असंगत नाटककार के रूप में हमारे सामने आते हैं।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निम्न बातें उजागर होती है।

1. <u>स्त्री पुरूष संबंधों पर नया प्रकाश</u> :-

विज्ञान, शिक्षा, के कारण उन्मुक्त संस्कृति के आदान-प्रदान के कारण संघर्षपूर्ण जीवन स्थितियों ने व्यक्तिगत संबंधों को प्रभावित किया। परिणामतः स्त्री पुरूष के बीच के सहज संबंध में परिवर्तन आया। स्त्री महत्वाकांक्षी बनी, परंपरा से विद्रोह किया। काम कुण्ठाओं की अभिव्यक्ति की। स्त्री समाज में काम करने लगी, उसी संबंध में अनेक प्रश्न निर्माण हुये। इच्छाये, आकांक्षाये, कुंठायें, बढने लगी। अतः कामसंबंधी खुला, व्यक्तिगत संबंधों का खुला विचार सामने आया। जिस परंपरा में योर्स फेथफुली, तेंदुआ आते है।

2. नाटकों में प्रतीकों के माध्यम से अपनी बात कही जाने लगी, आदमी की पशुवृत्ति, स्वार्थ, क्रूरता, हिंसकता लेकर आया जिसमें उसकी नीचता, विवशता, दिखायी देने लगी। इस पशुवृत्ति को अभिव्यक्त करने के लिए पशुओं को प्रतीक बनाया तथा जिसके द्वारा क्रूरता, हिंसकता की अभिव्यक्ति होन लगी – तिलचट्टा, तेंदुआ इसी प्रवृत्ति को अभिव्यक्त करते है।

इस प्रकार मुद्राराक्षस के प्रतीक नाटकों के अनुशीलन से तथ्य प्राप्त हुये है।